एक झील में डायनासौर के सैकड़ों पदचिंह मिले

अकस्मात ही सही मगर स्कॉटलैंड की एक तटीय झील में डायनासौर के सैकड़ों पदचिंहों के जीवाश्म मिले हैं। यह झील स्काई टापू पर समुद्र तट से थोड़ी ही अंदर है। एडिनबरा विश्वविद्यालय के स्टीफन ब्रुसेट और टॉम चेलैंड्स ने किसी अन्य चीज़ की तलाश करते-करते ये पदचिंह खोजे हैं। चाहे यह खोज संयोगवश हुई हो मगर डायनासौर के जीवन को समझने में इन पदचिंह जीवाश्मों से काफी मदद मिलने की उम्मीद है।

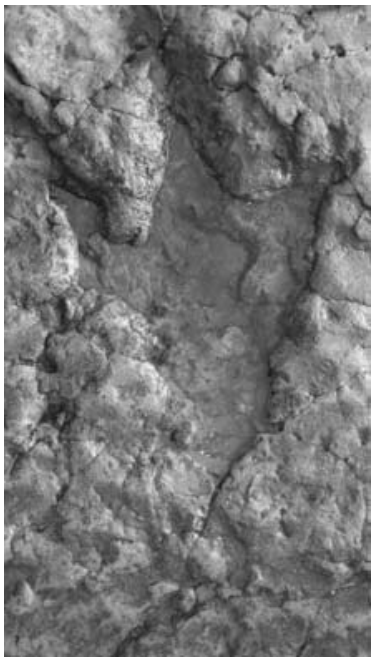

दरअसल, ब्रुसेट और चेलैंड्स उस इलाके में काफी समय से मछलियों के दांत और मगरमच्छों की हड्डियों की खोज कर रहे थे। जब वे दिन का काम पूरा करके लौटने को ही थे कि उनकी नज़र कुछ गड्ढों जैसी रचनाओं पर पड़ी। ध्यान से अवलोकन करने पर समझ में आया कि ये तो किसी जंतु के पैरों के निशान हैं।

पदचिंहों की साइज़ - करीब 70 से.मी. - से अंदाज़ लगा कि ये शुरुआती सौरोपोड्स ने छोड़े होंगे। सौरोपोड्स काफी बड़े जानवर होते थे। इनका वज़न करीब 20-20 टन और लंबाई 15 मीटर तक होती थी, ऊंचाई तो कई मंज़िलों के बराबर होती थी। डायनासौर में सबसे मशहूर *टायरेनोसैरस रेक्स* (*टी. रेक्स*) के मुकाबले ये कहीं ज़्यादा बड़े हुआ करते थे और शाकाहारी थे।

अनुमान है कि ये जीवाश्म मध्य जुरासिक युग (यानी करीब 17 करोड़ वर्ष पूर्व) के हैं। सौरोपोड्स की हड्डियों के जीवाश्म तो बहुत दुर्लभ हैं और पदचिंह भी बहुत कम पाए जाते हैं। इसीलिए स्कॉटलैंड में हुई यह खोज महत्वपूर्ण मानी जा रही है। ब्रुसेट व चेलैंड्स का विचार यह है कि ये सौरोपोड्स तैराक तो नहीं रहे होंगे। मगर उनकी ऊंचाई इतनी थी कि वे इस झील के घुटना-घुटना पानी में बड़ी आसानी से घूमते-फिरते होंगे।

यह उनकी जीवन शैली का एक नया पहलू है। हो सकता है कि ये महाकाय जीव झील में अपनी सुरक्षा के लिए घुसते हों या यह भी हो सकता है कि झील में बेहतर खाद्य वनस्पति मिलती थी। इन पदचिंहों के अध्ययन से डायनासौर में चलने-फिरने के तरीकों के विकास को समझने में भी मदद मिलने की उम्मीद है। ***(स्रोत फीचर्स)***